

न्यूज टुडे

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में भारत की जेंडर रिसॉन्सिव बजटिंग (GRB) की सराहना की गई

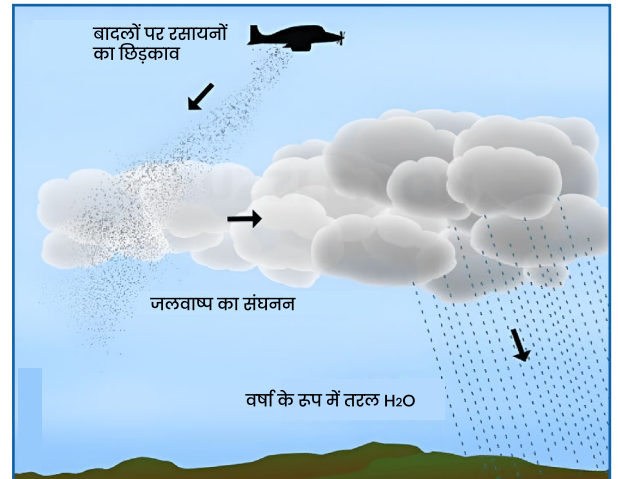
- इस रिपोर्ट का शीर्षक “चार्टिंग न्यू पाथ्स फॉर जेंडर इक्विटी एंड एम्पावरमेंट: एशिया-पैसिफिक रीजनल रिपोर्ट ऑन बीजिंग + 30 रिव्यू” है। इस रिपोर्ट में रेखांकित किया गया है कि भारत ने जेंडर रिसॉन्सिव बजटिंग (GRB) को अपनाकर संसाधनों के प्रभावी आवंटन के प्रति मजबूत प्रतिबद्धता दिखाई है।
- यह रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र एशिया-प्रशांत आर्थिक और सामाजिक आयोग (ESCAP) तथा यू.एन. वीमेन द्वारा प्रकाशित की गई है।
- जेंडर रिसॉन्सिव बजटिंग (GRB) या जेंडर बजटिंग क्या होती है?
 - यह लैंगिक विषय को मुख्यधारा में लाने का एक साधन है। इसके तहत बजट बनाने की संपूर्ण प्रक्रिया में लैंगिक या जेंडर आधारित दृष्टिकोण को शामिल किया जाता है।
 - यह कोई अलग बजट नहीं है और न ही यह महिलाओं और पुरुषों पर समान खर्च करने की बात करता है।
- भारत में जेंडर रिसॉन्सिव बजटिंग (GRB)
 - उत्पत्ति: इसे 2005-2006 में वित्त मंत्रालय ने शुरू किया था।
 - बजट सत्र में सरकार द्वारा जेंडर बजट स्टेटमेंट प्रस्तुत किया जाता है।
 - नोडल एजेंसी: महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (MWCD)।
 - इसके निम्नलिखित दो भाग हैं:
 - भाग A: इसमें ऐसी योजनाएं शामिल हैं, जो विशेष रूप से महिलाओं के लिए धन आवंटित करती हैं।
 - भाग B: यह बजट का प्रमुख हिस्सा होता है। इसमें ऐसी योजनाएं शामिल होती हैं, जिनमें महिलाओं के लिए कम-से-कम 30% धनराशि आवंटित की जाती है।
 - उल्लेखनीय है कि भारत में जेंडर बजटिंग मिशन शक्ति की उप-योजना ‘सामर्थ्य’ के अंतर्गत आती है।
- जेंडर रिसॉन्सिव बजटिंग के कार्यान्वयन में मुख्य चुनौतियां:
 - महिलाओं को लाभ पहुंचाने वाले प्रमुख कार्यक्रमों को शामिल न किया जाना;
 - जेंडर आधारित डेटा संग्रह में विशेषज्ञता का अभाव है आदि।

जेंडर रिसॉन्सिव बजटिंग की दक्षता में सुधार के लिए संयुक्त राष्ट्र की इस रिपोर्ट में की गई मुख्य सिफारिशें

- क्षेत्र स्तर पर जेंडर रिसॉन्सिव बजटिंग संबंधी प्रयासों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए मजबूत निगरानी तंत्र स्थापित करना चाहिए।
- बजट संबंधी प्राथमिकता वाले चरण के दौरान जेंडर रिसॉन्सिव बजटिंग दृष्टिकोण को शामिल किया जाना चाहिए।
- राज्य सरकारों और स्थानीय सरकारों को भी जेंडर रिसॉन्सिव बजटिंग को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

दिल्ली सरकार ने खराब होती वायु गुणवत्ता के महेनजर क्लाउड सीडिंग के लिए केंद्र सरकार से अनुमति मांगी है

- क्लाउड सीडिंग क्या है?
 - क्लाउड सीडिंग के बारे में: यह कृत्रिम रूप में मौसम में अपेक्षित बदलाव करने की एक तकनीक है। इसके तहत सीडिंग एजेंट को हवा में छोड़कर बादलों को कृत्रिम रूप से संतृप्त किया जाता है जिसके परिणामस्वरूप वर्षा होती है।
 - विधि: इसके तहत सर्वप्रथम विमान या हेलीकॉप्टर या जमीन-आधारित जनरेटर की सहायता से मौसम का विश्लेषण करके वर्षा करने में सक्षम बादलों की पहचान की जाती है। इसके बाद, सीडिंग एजेंट को इन बादलों में छोड़ा जाता है। सीडिंग पार्टिकल्स या कण जल की बड़ी बूंदों के निर्माण में मदद करते हैं। इसके परिणामस्वरूप अंततः वर्षा होती है।
 - इसमें उपयोग किए जाने वाले रसायन: क्लाउड सीडिंग की प्रक्रिया शुरू करने के लिए, बादलों में सिल्वर आयोडाइड, पोटेशियम आयोडाइड, सोडियम क्लोराइड, या शुष्क बर्फ (ठोस कार्बन डाइऑक्साइड) जैसे घटकों का छोड़ा जाता है। ये घटक सीडिंग एजेंट के रूप में कार्य करते हैं।
 - ये घटक अतिरिक्त नाभिक का निर्माण करते हैं जिस पर बादलों की नमी एकत्रित होने लगती है। समय के साथ इनका आकार बढ़ने लगता है और अधिक बूंदों का निर्माण भी होता जाता है।
- क्लाउड सीडिंग के प्रकार: इसके निम्नलिखित दो प्रकार हैं-
 - हाइड्रोस्कोपिक क्लाउड सीडिंग: तरल बादलों में बूंदों के विलय को तेज करता है। इसके तहत बादलों के निचले हिस्सों में फ्लेयर्स या विस्फोटकों के माध्यम से सीडिंग एजेंट्स या पार्टिकल्स को पहुंचाया जाता है।
 - ग्लेशियोजेनिक क्लाउड सीडिंग: अत्यधिक ठंडे बादलों में बर्फ के निर्माण को प्रेरित करती है।
- जलवायु परिवर्तन के समाधान के रूप में क्लाउड सीडिंग
 - पक्ष में तर्क:
 - वर्तमान मौसम की स्थिति को नियंत्रित करती है: यह जल वाष्प को नियंत्रित करती है; ओलावृष्टि और तूफान से होने वाले नुकसान को रोकती है; सर्दियों में बर्फबारी को बढ़ाती है आदि।
 - प्राकृतिक जल आपूर्ति को बढ़ाती है: शुष्क क्षेत्रों को अधिक रहने योग्य बनाने में मदद करती है और स्थानीय समुदायों को समर्थन प्रदान करती है।
 - वायु प्रदूषकों को नियंत्रित करने में मदद मिलती है: कृत्रिम वर्षा वातावरण में धूल, धुएं और रसायनों सहित प्रदूषकों की सांद्रता को कम करने में सहायता कर सकती है। साथ ही, वनाग्नि को नियंत्रित करने में भी मदद कर सकती है।
 - कृषि को लाभ: फसलों को सही समय पर नमी प्रदान करती है।
 - विपक्ष में तर्क:
 - अनुसंधान का अभाव: प्रदूषण के समाधान के रूप में इसकी प्रभावशीलता साबित करने के लिए पर्याप्त डेटा का अभाव है, जैसा कि दिल्ली के मामले में देखा गया था।
 - उपयुक्तता: कृत्रिम वर्षा के लिए आर्द्रता युक्त बादलों की उपस्थिति की आवश्यक होती है, क्योंकि सभी तरह के बादल सीडिंग के लिए उपयुक्त नहीं होते हैं।
 - उपयोग किए जाने वाले रसायनों का प्रभाव: कृत्रिम वर्षा के लिए सबसे अधिक सिल्वर आयोडाइड को वरीयता दी जाती है, जो बाद में आयोडिज्म पैदा करता है। आयोडिज्म आयोडीन विषाक्तता का एक प्रकार है। यह स्थलीय और जलीय जीवन के लिए विषाक्त साबित हो सकता है।
 - आर्थिक व्यवहार्यता: इसकी लागत लगभग 1 लाख रुपये प्रति वर्ग किलोमीटर आती है।
- निष्कर्ष: क्लाउड सीडिंग पर अनुसंधान करने के अलावा, अन्य प्रकृति आधारित (हरित अवसंरचना; शहरी वनस्पति आदि) तथा निर्माण आधारित (कार्बन कैप्चर और भंडारण, जैव-आधारित निर्माण सामग्री इत्यादि) समाधानों की खोज की जा सकती है।



केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री के अनुसार चेन्नई-व्लादिवोस्तोक पूर्वी समुद्री गलियारे का परिचालन शुरू हुआ

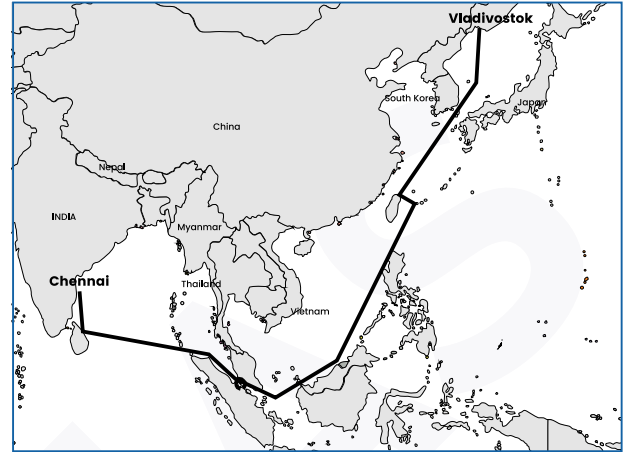
इसे पूर्वी समुद्री गलियारा (Eastern Maritime Corridor (EMC) के नाम से भी जाना जाता है। इससे भारत और रूस के बीच समुद्री संबंधों को बढ़ावा मिलेगा।

पूर्वी समुद्री गलियारे (EMC) के बारे में

- इसका विचार 2019 में रूस के व्लादिवोस्तोक में पूर्वी आर्थिक मंच (Eastern Economic Forum) की बैठक के दौरान प्रस्तुत किया गया था।
- इसका उद्देश्य पूर्वोत्तर एशिया से होकर भारतीय पत्तन चेन्नई और रूस के व्लादिवोस्तोक के बीच समुद्री मार्ग विकसित करना है।
- इस समुद्री मार्ग की लम्बाई 10,300 किमी है।
- यह मलक्का जलडमरूमध्य, दक्षिण चीन सागर, जापान सागर आदि से होकर गुजरता है।

इस कॉरिडोर का महत्व

- लॉजिस्टिक की लागत में कमी: इससे परिवहन के समय में लगभग 16 दिनों की कमी होगी और दूरी में लगभग 40% तक की कमी आएगी।
 - वर्तमान में मुंबई और सेंट पीटर्सबर्ग (रूस) के बीच स्वेज नहर के माध्यम से माल आवाजाही में लगभग 40 दिन का समय लगता है और लगभग 16,066 किलोमीटर की दूरी तय करनी पड़ती है।
- भारत के समुद्री क्षेत्र को बढ़ावा देना: यह क्षेत्र देश के व्यापार का माला के हिसाब से लगभग 95% और मूल्य के हिसाब से 70% व्यापार संभालता है।
 - यह मैरीटाइम इंडिया विज़न 2030 में योगदान करता है, जिसमें समुद्री क्षेत्र के सभी क्षेत्रों से 150 से अधिक पहलें शामिल हैं।
- चीन के प्रभुत्व से निपटना: यह समुद्री मार्ग दक्षिण-चीन सागर से भी होकर गुजरता है।
 - व्लादिवोस्तोक, रूस-चीन सीमा से थोड़ी दूरी पर स्थित है।
- भारत की एकदम फार ईस्ट नीति को बढ़ावा: यह भारत को रूसी संसाधनों तक बेहतर पहुंच प्रदान करता है और पैसिफिक ट्रेड नेटवर्क में भारत की स्थिति को मजबूत भी करता है।



अन्य महत्वपूर्ण समुद्री गलियारे

- भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (India-Middle East-Europe Economic Corridor: IMEEC): इसकी घोषणा 2023 में नई दिल्ली में आयोजित G-20 लीडर्स शिखर सम्मेलन के दौरान की गई थी। यह एशिया, यूरोप और मध्य पूर्व को आपस में जोड़ता है।
- अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (International North-South Transport Corridor: INSTC): इस परिवहन गलियारे के निर्माण का विचार पहली बार वर्ष 2000 में प्रस्तुत किया गया था। इसका उद्देश्य रूस के बाल्टिक सागर तट को ईरान के माध्यम से अरब सागर में भारत के पश्चिमी बंदरगाहों से जोड़ना है।

दूसरा भारत-कैरिबिक्क शिखर सम्मेलन' गुयाना में संपन्न हुआ

भारत और कैरिबियाई समुदाय (कैरिबिक्क/ CARICOM) के बीच संबंधों को मजबूत करने के लिए भारत ने सात प्रमुख स्तंभों (पिलर्स) का प्रस्ताव प्रस्तुत किया है।

भारत द्वारा प्रस्तावित सात स्तंभों का संक्षिप्त नाम C-A-R-I-C-O-M ही है। ये स्तंभ हैं-

- क्षमता निर्माण (C),
- कृषि और खाद्य सुरक्षा (A),
- नवीकरणीय ऊर्जा व जलवायु परिवर्तन (R),
- नवाचार, प्रौद्योगिकी और व्यापार (I),
- क्रिकेट और संस्कृति (C),
- महासागर अर्थव्यवस्था (O) तथा
- चिकित्सा और स्वास्थ्य देखभाल (M)।

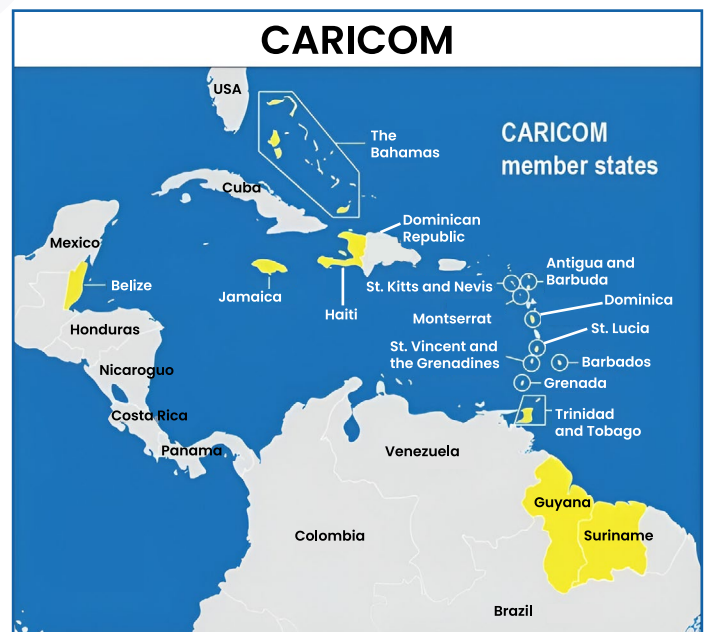
पहला भारत-कैरिबिक्क शिखर सम्मेलन 2019 में आयोजित किया गया था।

कैरिबिक्क के बारे में

- यह 1973 में स्थापित एक क्षेत्रीय संगठन है। इसका उद्देश्य कैरिबियन देशों के बीच आर्थिक एकीकरण और सहयोग को बढ़ावा देना है।
- इसमें 15 सदस्य देश और 6 एसोसिएट सदस्य हैं। इसके सदस्यों में एंटीगुआ और बारबुडा, बहामास, बारबाडोस, बेलीज आदि शामिल हैं।

भारत के लिए कैरिबिक्क का महत्व

- बहुपक्षीय मंचों पर भारत का समर्थन: एंटीगुआ और बारबुडा जैसे कैरिबिक्क के सदस्य देश अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत के पक्ष का समर्थन करते हैं।
 - जैसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता का समर्थन।
- साउथ-साउथ कोऑपरेशन: कैरिबिक्क के सदस्य देशों ने भारत द्वारा आयोजित तीसरे वायस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलन, 2024 में भाग लिया था।
- रक्षा निर्यात: उदाहरण के लिए, हाल ही में हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL) ने गुयाना को दो डोर्नियर 228 विमान निर्यात किए थे।
- जलवायु कार्रवाई और ऊर्जा सुरक्षा में सहयोग: उदाहरण के लिए- सूरीनाम अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) में शामिल हुआ है।
- अन्य दृष्टि से महत्व:
 - कैरिबिक्क देश भारत के लिए लैटिन अमेरिका में प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करते हैं।
 - दोनों पक्ष आपदा-रोधी क्षमता बढ़ाने में सहयोग कर रहे हैं। जैसे-आपदा रोधी अवसंरचना के लिए गठबंधन।
 - लिनिदाद और टोबैगो जैसे कैरिबियन देशों में बड़ी संख्या में प्रवासी भारतीय रहते हैं आदि।



प्रधान मंत्री आवास योजना-ग्रामीण (PMAY-ग्रामीण) के 8 साल पूरे हो गए

- ▶ प्रधान मंत्री आवास योजना-ग्रामीण को ग्रामीण विकास मंत्रालय (MoRD) ने 2016 में शुरू किया था।
- ▶ प्रधान मंत्री आवास योजना-ग्रामीण के बारे में
 - ⊕ उद्देश्य: आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (EWS) सहित समाज के सबसे गरीब वर्गों को आवास उपलब्ध कराना।
 - ⊕ योजना का प्रकार: यह एक केंद्र प्रायोजित योजना (CSS) है।
 - ⊕ मुख्य लक्ष्य: मूलतः 2023-24 तक 2.95 करोड़ घरों का निर्माण पूरा किया जाना था।
 - ◆ 2 करोड़ और घर बनाने के लक्ष्य के साथ इस योजना को वित्त वर्ष 2024-29 तक बढ़ा दिया गया है। इसके लिए 3,06,137 करोड़ रुपये का कुल परिचय निर्धारित किया गया है।
 - ⊕ घर का स्वामित्व: अनिवार्य रूप से परिवार की महिला मुखिया को दिया जाता है।
 - ⊕ पालता मानदंड: सामाजिक, आर्थिक और जातिगत जनगणना (SECC), 2011 के अनुसार बेघर परिवार और कच्चे मकान वाले परिवार।
 - ⊕ लाभार्थियों का चयन: SECC, ग्राम सभा और जियो-टैगिंग के माध्यम से तीन-चरणीय सत्यापन किया जाता है।
 - ⊕ सहायता: मैदानी क्षेत्रों में 1.20 लाख रुपये तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों और पहाड़ी राज्यों (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर एवं लद्दाख) में 1.30 लाख रुपये।
 - ◆ पाल लाभार्थियों को 3% की घटती ब्याज दर पर 70,000 रुपये तक का ऋण उपलब्ध है।
 - ◆ स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण के अंतर्गत शौचालयों के लिए 12,000/- रुपये दिए जाते हैं।
 - ⊕ अन्य योजनाओं के साथ समन्वय: प्रधान मंत्री उज्ज्वला योजना के तहत LPG कनेक्शन, जल जीवन मिशन के तहत सुरक्षित पेयजल की उपलब्धता जैसी बुनियादी सुविधाएं प्रदान की जाती हैं।
 - ◆ पाल परिवार ग्रामीण राजमिस्त्री प्रशिक्षण के तहत अकुशल श्रमिक के रूप में 95 दिनों का रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

प्रधान मंत्री आवास योजना-ग्रामीण के अंतर्गत प्रगति

- ▶ वर्तमान स्थिति: स्वीकृत 3.21 करोड़ घरों में से नवंबर 2024 तक 2.67 करोड़ घर पूरे हो चुके हैं।
- ▶ महिला सशक्तीकरण: स्वीकृत घरों में से 74% का स्वामित्व पूरी तरह से या संयुक्त रूप से महिलाओं के पास है।
- ▶ कौशल विकास: लगभग 3 लाख ग्रामीण राजमिस्त्रियों को प्रशिक्षित किया गया है।

यूनिसेफ ने “स्टेट ऑफ द वर्ल्ड्स चिल्ड्रन, 2024” रिपोर्ट जारी की

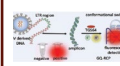
- ▶ यूनिसेफ ने अपनी इस फ्लैगशिप रिपोर्ट में जनसांख्यिकीय बदलाव, जलवायु संकट और फ्रंटियर टेक्नोलॉजीज नामक तीन वैश्विक मेगाट्रेंड्स को रेखांकित किया है। ये मेगाट्रेंड्स समाज में कई प्रभाव पैदा कर सकते हैं, जिनसे असमानता, प्रवासन और शहरीकरण की दशा व दिशा प्रभावित होंगी।
- ▶ रिपोर्ट के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर:
 - ⊕ जनसांख्यिकीय बदलाव: विश्व में बच्चों की जनसंख्या 2050 तक लगभग 2.3 बिलियन पर पहुंचकर स्थिर हो जाने का अनुमान है।
 - ◆ भारत में 2050 तक बच्चों की संख्या 350 मिलियन होगी। यह विश्व में बच्चों की संख्या का 15% होगी।
 - ⊕ जलवायु जोखिम: दुनिया के लगभग आधे बच्चे यानी 1 बिलियन बच्चे ऐसे देशों में रहते हैं, जो जलवायु और पर्यावरण से जुड़े अधिक खतरों का सामना कर रहे हैं।
 - ◆ यूनिसेफ के “बाल जलवायु जोखिम सूचकांक 2021” में भारत 26वें स्थान पर था। सूचकांक के अनुसार बच्चे जलवायु के अधिक खतरों का सामना कर रहे हैं।
 - ⊕ फ्रंटियर टेक्नोलॉजीज: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) जैसी फ्रंटियर टेक्नोलॉजीज का सभी तक लाभ पहुंचाने में डिजिटल डिवाइड बड़ी चुनौती साबित हो रहा है।
 - ◆ उच्च आय वाले देशों में 95% से अधिक लोग इंटरनेट से जुड़े हुए हैं, वहीं कम आय वाले देशों में केवल 26% लोग ही इंटरनेट से कनेक्टेड हैं।
- ▶ रिपोर्ट में की गई प्रमुख सिफारिशें:
 - ⊕ योजना: जलवायु संकटों से निपटने की रणनीतियों को स्थानीय योजना निर्माण और अवसर-चयन से एकीकृत करना चाहिए। इनमें स्कूल, स्वास्थ्य देखभाल सेवा जैसी अवसर-चयनात्मक प्रणालियां शामिल हैं।
 - ⊕ नवीकरणीय ऊर्जा: नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश बढ़ाना चाहिए और 2030 तक उत्सर्जन में 43% की कटौती करने के लिए समाधानों को बढ़ावा देना चाहिए।
 - ⊕ नीतिगत सुधार: डिजिटल प्लेटफॉर्म पर बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए कानून बनाने चाहिए। इन कानूनों में डिजिटल प्लेटफॉर्म से जुड़े अपराध को शामिल करना, प्रौद्योगिकी विकास के लिए नैतिक दिशा-निर्देश अपनाना, आदि शामिल होने चाहिए।

अन्य सुर्खियां



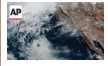
शीतलहर (Cold Waves)

- ▶ हाल ही में, राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन और मानव स्वास्थ्य कार्यक्रम (NPCCHH) ने शीतलहर पर कुछ राज्यों को सलाह जारी की।
- ⊕ NPCCHH केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत कार्य करता है।
- ▶ शीतलहर के बारे में
 - ⊕ यह एक प्रकार की मौसमी परिघटना है। यह पृथ्वी से कम ऊंचाई पर वायुमंडल में बहुत ही कम तापमान के कारण उत्पन्न होती है।
 - ⊕ भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने निम्नलिखित स्थितियों को शीतलहर के रूप में वर्गीकृत किया है:
 - ◆ मैदानी क्षेत्र में न्यूनतम तापमान 10°C से कम या इसके बराबर होना;
 - ◆ पहाड़ी क्षेत्रों में न्यूनतम तापमान 0°C से कम या इसके बराबर होना।
 - ⊕ प्रभाव:
 - ◆ शीतदंश (फ्रॉस्टबाइट) या अन्य बीमारियों का खतरा बढ़ना;
 - ◆ हीटर जैसे उपकरणों या अन्य हीटिंग साधनों की वजह से खर्च बढ़ना;
 - ◆ गरीबों का अधिक प्रभावित होना, आदि।



GQ-RCP प्लेटफॉर्म

- ▶ शोधकर्ताओं ने HIV का बेहतर तरीके से पता लगाने के लिए एक नवीन तकनीक विकसित की है। इसके लिए जी-क्वाड्रूप्लेक्स (GQ) टोपोलॉजी-टारगेटेड रिलायबल कंफॉर्मेशनल पॉलीमोर्फिज्म (GQ-RCP) प्लेटफॉर्म का उपयोग किया गया है।
- ⊕ ह्यूमन इम्यूनोडिफेंसिवेस वायरस टाइप-1 (HIV-1) एक रेट्रोवायरस है। यह एक्वायर्ड इम्यूनोडिफेंसिवेस सिंड्रोम (AIDS/ एड्स) बीमारी के लिए उत्तरदायी है।
- ▶ GQ-RCP प्लेटफॉर्म के बारे में
 - ⊕ विकासकर्ता: इसे जवाहरलाल नेहरू सेंटर फॉर एडवांस्ड साइंटिफिक रिसर्च, बेंगलुरु ने विकसित किया है।
 - ⊕ इस प्लेटफॉर्म को बैक्टीरिया और वायरस सहित अलग-अलग डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड (डी.एन.ए.)/ राइबोन्यूक्लिक एसिड (आर.एन.ए.) आधारित रोगजनकों का पता लगाने के लिए अपनाया जा सकता है।
 - ⊕ यह एक फ्लोरोमेट्रिक जांच विधि है।
 - ◆ फ्लोरोमेट्री को उत्सर्जित प्रतिदीप्ति (Fluorescence) प्रकाश की माप के रूप में परिभाषित किया गया है। प्रतिदीप्ति, विकिरण को अवशोषित करने के बाद दृश्य प्रकाश छोड़ने की कुछ रसायनों की क्षमता होती है।



बम साइक्लोन

- हाल ही में, उत्तर-पश्चिमी संयुक्त राज्य अमेरिका और पश्चिमी कनाडा में बम साइक्लोन ने दस्तक दी है।
- बम साइक्लोन के बारे में
 - इसे बमजेनेसिस भी कहा जाता है। यह मध्य अक्षांशीय चक्रवात और कम दबाव वाला क्षेत्र है। यह 24 घंटे की अवधि में तेज़ी से प्रबल हो जाता है।
 - 24 घंटे में इसके केंद्र में वायुदाब में कम-से-कम 24 मिलीबार तक की गिरावट दर्ज की जाती है।
 - इनमें से अधिकतर चक्रवात समुद्र के ऊपर उत्पन्न होते हैं। ये उष्णकटिबंधीय या गैर-उष्णकटिबंधीय चक्रवात हो सकते हैं।
 - ये चक्रवात आमतौर पर ब्लिजार्ड से लेकर प्रबल झंझावात और भारी वर्षा के साथ आगे बढ़ते हैं।

भू-नीर पोर्टल (Bhu-Neer Portal)

- हाल ही में, केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय ने भारत जल सप्ताह 2024 के दौरान “भू-नीर” पोर्टल लॉन्च किया।
- भू-नीर पोर्टल के बारे में
 - उद्देश्य: राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर भूजल संसाधनों के प्रबंधन एवं विनियमन के लिए वन-स्टॉप प्लेटफॉर्म के रूप में कार्य करना।
 - इसे केंद्रीय भूजल प्राधिकरण (CGWA) ने राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (NIC) के सहयोग से विकसित किया है।
 - CGWA का गठन पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 के तहत किया गया है। इसका उद्देश्य देश में भूजल संसाधनों के विकास और प्रबंधन को विनियमित व नियंत्रित करना है।



एंटीबायोटिक्स

- हाल ही में, केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री ने प्रतिरोधी संक्रमणों के लिए पहला स्वदेशी एंटीबायोटिक “नेफिथ्रोमाइसिन” लॉन्च किया।
- एंटीबायोटिक्स के बारे में
 - ये वे रासायनिक पदार्थ हैं, जो कृत्रिम रूप से और कुछ सूक्ष्मजीवों द्वारा उत्पादित होते हैं। इनका रोग पैदा करने वाले सूक्ष्मजीवों को मारने या उनकी वृद्धि को रोकने के लिए दवाओं के रूप में उपयोग किया जाता है।
 - मनुष्यों और पशुओं के लिए इनकी विषाक्तता कम होती है। पशुओं में सूक्ष्मजीवी संक्रमण की जांच के लिए इसे पशुओं के चारे के साथ मिलाया जाता है।
 - वे बैक्टीरिया से होने वाले संक्रमण के विरुद्ध काम करते हैं, न कि वायरल संक्रमण (जैसे सामान्य सर्दी, फ्लू) के खिलाफ।
 - वायरस में वह कोशिका भित्ति नहीं होती, जिस पर एंटीबायोटिक्स द्वारा हमला किया जाता है। इस कारण एंटीबायोटिक्स का वायरस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
 - कुछ एंटीबायोटिक्स के उदाहरण: स्ट्रेप्टोमाइसिन, टेट्रासाइक्लिन, एंरिकोमाइसिन आदि।



AI डेटा बैंक

- केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने भारत का पहला आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) डेटा बैंक लॉन्च किया।
- AI डेटा बैंक के बारे में
 - उद्देश्य: यह शोधकर्ताओं, स्टार्ट-अप्स और डेवलपर्स को उच्च-गुणवत्ता वाले विविध डेटासेट प्रदान करेगा। इससे व्यापक और समावेशी AI समाधान के विकास में मदद मिलेगी।
 - यह सैटेलाइट, ड्रोन और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) से प्राप्त डेटा का रियल-टाइम विश्लेषण प्रदान करेगा। इससे राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित होगी।
 - यह डेटा बैंक आपदा प्रबंधन और साइबर सुरक्षा के पूर्वानुमान हेतु डेटा विश्लेषण में AI का उपयोग करने के भारत के लक्ष्य के अनुरूप है।



डॉप्लर रडार

- हाल ही में, उपभोक्ता कार्य विभाग ने लीगल मेट्रोलाजी (सामान्य) नियम, 2011 के तहत वाहनों की गति मापने के लिए माइक्रोवेव डॉप्लर रडार उपकरण हेतु मसौदा नियम जारी किए।
- डॉप्लर रडार के बारे में
 - यह रडार के सबसे महत्वपूर्ण प्रकारों में से एक है। यह रडार किसी ऑब्जेक्ट की अवस्थिति, गति और दूरी को निर्धारित करने के लिए डॉप्लर प्रभाव का उपयोग करता है।
 - डॉप्लर प्रभाव स्रोत और प्रेक्षक के बीच सापेक्ष गति के दौरान तरंग आवृत्ति में होने वाले परिवर्तन को व्यक्त करता है।
 - उपयोग: मौसम विज्ञान (मौसम पैटर्न को ट्रैक करना); विमानन (हवाई यातायात को ट्रैक करना); सैन्य (विमानों और मिसाइलों को ट्रैक करना), आदि।



जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक (CCPI), 2025

- जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक, 2025 थिंक टैंक जर्मनवाँच, न्यू क्लाइमेट इंस्टीट्यूट और क्लाइमेट एक्शन नेटवर्क इंटरनेशनल ने संयुक्त रूप से जारी किया है।
- सूचकांक में पहले तीन स्थान पर कोई देश नहीं है। डेनमार्क चौथे स्थान पर है।
- सूचकांक में भारत 10वें स्थान पर है।
- जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक के बारे में
 - यह सूचकांक विश्व के सबसे बड़े कार्बन उत्सर्जकों की वैश्विक ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन में कमी, नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा उपयोग और जलवायु नीति के मामले में प्रगति को ट्रैक करता है।
 - इसमें 63 देशों और यूरोपीय संघ की रैंकिंग की जाती है।

सुर्खियों में रहे व्यक्तित्व



डॉ. हरेकृष्ण महताब (1899-1987)

- डॉ. हरेकृष्ण महताब की 125वीं जयंती मनाई गई। इन्हें उल्लूक केशरी के नाम से भी जाना जाता है।
 - ये एक स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिज्ञ, इतिहासकार, लेखक, समाज सुधारक और पत्रकार थे।
- योगदान
 - इन्होंने असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह आदि में सक्रिय रूप से भाग लिया था।
 - इन्होंने ओडिशा को भारत संघ में शामिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
 - ये स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस और महात्मा गांधी जैसी हस्तियों से प्रभावित थे।
 - 1946 से 1950 तक ओडिशा के मुख्यमंत्री रहे थे।
- मूल्य: दृढ़ संकल्प, नेतृत्व आदि।



अहमदाबाद



बेंगलूरु



भोपाल



चंडीगढ़



दिल्ली



गुवाहाटी



हैदराबाद



जयपुर



जोधपुर



लखनऊ



प्रयागराज



पुणे



राँची